

मूर्ख बगुला और नेवला

जंगल के एक बड़े वट-वृक्ष की खोल में बहुत से बगुले रहते थे । उसी वृक्ष की जड़ में एक साँप भी रहता था । वह बगुलो के छोटे-छोटे बच्चो को खा जाता था ।

एक बगुला साँप द्वारा बार-बार बच्चो के खाये जाने पर बहुत दुःखी और विरक्त सा होकर नदी के किनारे आ बैठा ।

उसकी आँखो में आँसू भरे हुए थे । उसे इस प्रकार दुःखमग्न देखकर एक केकडे ने पानी से निकल कर उसे कहा :-"मामा ! क्या बात है, आज रो क्यों रहे हो ?"

बगुले ने कहा - "भैया ! बात यह है कि मेरे बच्चो को साँप बार-बार खा जाता है । कुछ उपाय नहीं सूझता, किस प्रकार साँप का नाश किया जाय । तुम्ही कोई उपाय बताओ ।" केकडे ने मन में सोचा, 'यह बगुला मेरा जन्मवैरी है, इसे ऐसा उपाय बताऊंगा, जिससे साँप के नाश के साथ-साथ इसका भी नाश हो जाए। यह सोचकर वह बोला -"मामा! एक काम करो, मांस के कुछ टुकडे लेकर नेवले के बिल के सामने डाल दो । इसके बाद बहुत से टुकडे उस बिल से शुरु करके साँप के बिल तक बखेर दो । नेवला उन टुकडो को खाता-खाता साँप के बिल तक आ जायगा और वहाँ साँप को भी देखकर उसे मार डालेगा ।"

बगुले ने ऐसा ही किया । नेवले ने साँप को तो खा लिया किन्तु साँप के बाद उस वृक्ष पर रहने वाले बगुलो को भी खा डाला।

बगुले ने उपाय तो सोचा, किन्तु उसके अन्य दुष्परिणाम नहीं सोचे। अपनी मूर्खता का फल उसे मिल गया ।

सीख: करने से पहले सोचो।

भद्र गगला और नवेल

एंगल क एक मरु वेए-वहु की अपने भगुरु म गगल रुरुत घा उभी वहु की एक भद्रक भापी सी रुरुत घा। वरु गगल के केए-केए मरुके पोषा रुरुत घा।

एक गगला भापी मरु गार-गार मरुके पोषा रुरुत मरुत मरुपी और विरुमा रुकेर नदी क किनार मरु मरु।

उमकी मुपि भे मुभी रुर रुए घा उम उम प्रकार मरुपभग मरुपिकर एक ककेरु ने पोनी मरुनिकल कर उम केरु :- "भाभा ! कुरु मरुत रु, मुए र केरु रु रु?"

गगलु ने केरु - "रुयै ! मरुत वरु रुकै भरे मरुके भापी गार-गार मरु रुरुत रुकै उपाष नदी मरुत, किम प्रकार भापी का नाम किषा रुरुत। उभी करु उपाष मरुत।"

ककेरु ने भन भमैरु, 'वरु गगला भरे एनरुगी रु, उम रुरुत उपाष मरुत उगा, एमम भापी क नाम क मोष-भाष उमका सी नाम रु रुरुत। वरु मरुकेर वरु मरुत - "भाभा! एक काम कर, भाभ क केरु एरु रु ले केरु नवेल के मरुल क मोभन रुल मरु उमक मरु मरुत मरु एरु रु उम मरुल मरु मरु कर क मोपी क मरुल उक मरुपरे मरु नवेल। उन एरु रु के पोषा मरुत-मरुत भापी क मरुल उक मरु रुरुत गार और वरु भापी क रुरुत मरुपिकर उम मरुत रुलगा।"

गगलु ने रुरुत नदी किषा। नवेल ने भापी क उरुपो लरुत किनरु भापी क मरुत उम वरु पर रुरुत वरुल गगलु के रुरुत मरु रुल।

गगलु ने उपाष उ मरुत, किनरु उमक मरुत मरुत मरुत नदी मरुत मरुपनी मरुत का रुल उम मरुल गय।

भीप: करन मरुपेरुल मरुत

मरुत - विरु केल रुरुत